

टोमॅटो

वाण:- अपुर्वा, विजय.

हवामान:- टोमॅटोची लागवड वर्षभर करता येते, परंतु हे पीक जास्त ओलावा आणि दंव सहन करू शकत नाही. यासाठी, तापमान १८ अंश ते २७ अंश सेंटीग्रेड दरम्यान योग्य आहे. फळधारणेसाठी रात्रीचे आदर्श तापमान १५ अंश ते २० अंश सेंटीग्रेड दरम्यान असावे. जास्त उष्णतेमुळे फळांचा रंग आणि चवीवर प्रतिकूल परिणाम होतो.

जमिनीची निवड:- पोषक तत्वांनी समृद्ध चिकणमाती जमीन त्याच्या लागवडीसाठी योग्य आहे. यासाठी, चांगली निचरा व्यवस्था आवश्यक आहे.

जमीन तयार करणे:- प्रगत टोमॅटो लागवडीपासून जास्तीत जास्त उत्पादन मिळविण्यासाठी, माती फिरवणाऱ्या नांगराने पहिली नांगरणी केल्यानंतर, कल्टिव्हेटरने २ ते ३ नांगरणी करा. जर कल्टिव्हेटर उपलब्ध नसेल, तर तुम्ही हॅरो देखील वापरू शकता. प्रत्येक नांगरणीनंतर, नांगर वापरा जेणेकरून नांगरणी करताना बाहेर पडणारे ढिगारे फुटतील आणि जमीन सपाट होईल.

बियाण्यांवर प्रक्रिया:- प्रति किलो बियाण्यांवर १.५-२ ग्रॅम बाविस्टिन घाला.

लागवडीची वेळ - टोमॅटो लावण्याची वेळ हवामान आणि तापमानावर अवलंबून असते.

पावसाळी ऋतू - जून - जुलै, शरद ऋतू - ऑक्टोबर - नोव्हेंबर, वसंत ऋतू - जानेवारी - फेब्रुवारी

बियाण्यांचा दर: प्रति हेक्टर १२५ ते १५० किलो बियाणे आवश्यक आहे.

लागवडीचे अंतर: टोमॅटोच्या बिया लावण्यापूर्वी, तुमच्या गरजेनुसार १ मीटर रुंद आणि लांबीचे लहान वाफे बनवा, नंतर ओळींमध्ये बियाणे पेटा. ते ४-५ आठवड्यात तयार होते.लागवडीचे अंतर: रोप ते रोप - ४५-६० सेमी, ओळी ते ओळी - ६०-९० सेमी.

खत आणि खत:- शेत तयार करताना, प्रति हेक्टर २० ते २५ टन कुजलेले शेणखत किंवा कंपोस्ट मातीत मिसळा.

| क्र. | प्रति हेक्टर रासायनिक खत | नायट्रोजन (किलो) | फॉस्फरस (किलो) | पोटॅश (किलो) |
|------|--|------------------|----------------|--------------|
| १ | रोपण केल्यानंतर पहिला डोस ६-८ दिवसांनी | 200 | 100 | 100 |
| २ | दुसरा डोस पहिल्या डोसनंतर १५-२० दिवसांनी | 50 | 100 | 100 |
| ३ | तिसरा डोस दुसऱ्या डोसनंतर १५-२० दिवसांनी | 50 | 00 | 00 |
| ४ | पहिल्या फळ काढणीनंतर | 50 | 00 | 00 |

रोग आणि कीटक नियंत्रण: रासायनिक औषधांचा डोस आणि वेळ:- फर्टेरा (ड्युपोंड) प्रति एकर ४ किलो किंवा व्हर्टिको (सिजेंटा) २.५ किलो प्रति एकर खतासह वापरल्याने २१ दिवसांपर्यंत रस शोषक कीटकांपासून संरक्षण मिळते..

| क्र. | रोग/कीट | नियंत्रण | प्रति लिटर पाण्यात प्रमाण |
|------|--------------------|----------------|---------------------------|
| 1 | फळ रॉट | डायथेन एम-45 | ०२ ग्रॅम प्रति लिटर |
| 2 | विल्ट | एॅलिप्ट | ०२ ग्रॅम प्रति लिटर |
| 3 | करपा पूर्वीचा रोग | एन्टरकॉल | ०३ ग्रॅम प्रति लिटर |
| 4 | उशिरा येणारा करपा | मेलोडी ड्युओ | ६०० ग्रॅम प्रति एकर |
| 5 | पानांवर पांढरे डाग | बेलेटॉन | २०० ग्रॅम प्रति एकर |
| 6 | फळ पोखरणारी कीड | प्रोफेनोफॉस | ०१ मि. ली पर ली |
| | | फेम | ०.२५ मि. ली पर ली |
| 7 | लीफ मायनर | कॉन्फिडोर सुपर | ०६ मि. प्रति लिटर १५ लिटर |
| 8 | मावा आणि तुडतुडे | कॉन्फिडोर | ०.५ मि. ली पर ली |
| | | एक्टरा | ०४ ग्रॅम प्रति १० लिटर |
| 9 | फुलकिडे | रिजेन्ट | ०२ मि. ली पर ली |
| 10 | पांढरी माशी | लॅनो | ०२ मि. ली पर ली |
| | | पेगासस | ०१ ग्रॅम प्रति लिटर |
| 11 | माईट | सल्फर | ०२ ग्रॅम प्रति लिटर |
| | | मॅजिस्टर | ०२ मि. ली पर ली |

पानांचा मुरगळ आणि मोझेक (विषाणुजन्य रोग) - पाने खाली वळतात आणि मुरडतात, प्रभावित पाने लहान, जाड आणि खडबडीत होतात. पानांचा रंग पिवळा होतो आणि जर रोग तीव्र झाला तर फुलेही येत नाहीत. हा रोग पांढऱ्या माशीमुळे होतो, म्हणून त्याचे नियंत्रण केले पाहिजे. हे टाळण्यासाठी, लागवडीनंतर ३ आठवड्यांनी आणि आवश्यकतेनुसार १५ दिवसांच्या अंतराने इमिडाक्लोप्रिड (१०० मिली प्रति ५०० लिटर पाण्यात) वापरा.

पाणी देणे:- हिवाळ्यात, ६ ते ७ दिवसांच्या अंतराने आणि उन्हाळ्यात, जमिनीतील ओलाव्यानुसार १०-१५ दिवसांच्या अंतराने पाणी द्यावे. टोमॅटो भिजवल्यानंतर जास्त पाणी दिल्यास त्यात भेगा पडतात. फुलोऱ्याच्या वेळी सिंचन महत्वाचे आहे. अनेक अभ्यासानुसार, असे आढळून आले आहे की दर पंधरा दिवसांनी अर्धा इंच पाणी दिल्यास मुळे अधिक पसरतात आणि त्यामुळे उत्पादनातही वाढ होते.

तण नियंत्रण:- नियमित अंतराने तण काढत राहा आणि मुळांना मातीने झाकून टाका. ४५ दिवस शेत तणमुक्त ठेवा. जर तण नियंत्रणाबाहेर वाढले तर ते उत्पादन ७०-९० टक्क्यांनी कमी करू शकतात. तण नियंत्रणासाठी आणि मातीचे तापमान कमी करण्यासाठी पॉलिथिलीनचा थर वापरता येतो.

पिकांची काढणी:- रोपे लावल्यानंतर ७० दिवसांनी झाडांना फळे येऊ लागतात. फळे दूरच्या ठिकाणी नायची आहेत की ताजी फळे बाजारात विकायची आहेत इत्यादींवर कापणीचा वेळ अवलंबून असतो. १/४ भाग गुलाबी रंगाचे पिकलेले हिरवे टोमॅटो लांब पल्ल्याच्या ठिकाणी नेण्यासाठी वापरले जातात. बहुतेक फळे गुलाबी किंवा लाल होतात, परंतु कडक लगदा असलेले टोमॅटो जवळच्या बाजारात विकले जाऊ शकतात. पूर्णपणे पिकलेले आणि मऊ लगदा असलेले टोमॅटो इतर उत्पादने बनवण्यासाठी आणि बिया तयार करण्यासाठी वापरले जातात.

टीप:- वरील सर्व माहिती आमच्या संशोधन केंद्रात केलेल्या प्रयोगांवर आधारित आहे. वेगवेगळ्या ठिकाणी वेगवेगळ्या हवामान, मातीचा प्रकार आणि ऋतूमुळे वरील माहिती वेगवेगळी असू शकते.

टमाटर

किस्में:- अपूर्वा, विजय.

जलवायु:- टमाटर की खेती वर्ष भर की जा सकती है, परंतु यह फसल अत्यधिक नमी और पाला सहन नहीं कर सकती है। इसके लिए तापमान 18 डिग्री से 27 डिग्री सेंटीग्रेट के बीच उपयुक्त है। फल लगने के लिए रात का आदर्श तापमान 15 डिग्री से 20 डिग्री सेंटीग्रेट के बीच रहना चाहिए। ज्यादा गर्मी में फलों के रंग व स्वाद पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

भूमि का चयन:- पोषक तत्व युक्त दोमट भूमि इसकी खेती के लिए उपयुक्त है। इसके लिए अच्छी जल निकास व्यवस्था होना आवश्यक है।

भूमि की तैयारी:- टमाटर की उन्नत खेती से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करने के बाद कल्टीवेटर से 2 से 3 जुटाइयाँ करें। अगर कल्टीवेटर की उपलब्धता ना होने पर आप हैरो का भी प्रयोग कर सकते हैं। हर जुताई के बाद पाटा चला दें ताकि जुताई के दौरान निकले ढेले टूट जाएँ। और भूमि समतल हो जाए।

बीज उपचार:- 1.5-2 ग्राम बाविस्टिन प्रति किलोग्राम बीज की दर से लगायें।

रोपाई का समय – टमाटर की रोपाई का समय जलवायु व तापमान पर निर्भर करता है।

वर्षा ऋतु – जून – जुलाई, शरद ऋतु – अक्टूबर – नवम्बर, बसंत ऋतु – जनवरी – फरवरी

बीज दर : प्रति हेक्टेयर 125 से 150 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

लगाने की दूरी : टमाटर के बीज को लगाने से पहले छोटी-छोटी क्यारियां जिसका आकार 1 मीटर चौड़ा और लम्बाई अपने हिसाब से रखते हैं फिर उसमें बीज कतार से कतार डालते हैं। यह 4-5 सप्ताह में तैयार हो जाता है।

लगाने की दूरी : पौधा- पौधा – 45-60 सेमी कतार से कतार – 60-90 सेमी।

खाद एवं उर्वरक:- खेत तैयार करते समय 20 से 25 टन प्रति हेक्टेयर गली सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट अवश्य मिट्टी में मिलाएं

| क्र. | रासायनिक खाद प्रति हेक्टेयर | नत्रजन (कि.ग्रा.) | फास्फोरस (कि.ग्रा.) | पोटाश (कि.ग्रा.) |
|------|--|-------------------|---------------------|------------------|
| 1 | रोपाई के बाद 6-8 दिनों में पहिली मात्रा | 200 | 100 | 100 |
| 2 | दूसरी मात्रा पहली मात्रा के 15-20 दिन बाद | 50 | 100 | 100 |
| 3 | तिसरी मात्रा दूसरी मात्रा के 15-20 दिन बाद | 50 | 00 | 00 |
| 4 | पहली फल तुड़ाई के बाद | 50 | 00 | 00 |

रोग और कीट:- खाद के साथ फरटेरा (ड्रपौड) 4 किलो प्रति एकड़ अथवा व्हिटिको (सिंजेटा) 2.5 किलो प्रति एकड़ इस प्रमाण से एस्तेमाल करणे से 21 दिन तक रस चुसानेवाले किट से संरक्षण मिलता है।

| क्र. | रोग/ कीट | नियंत्रण | मात्रा प्रति ली पाणी में |
|------|----------------------|----------------|--------------------------|
| 1 | फल का गलना | डायथेन एम-45 | 02 ग्राम प्रति ली |
| 2 | मुरझाना (विल्ट) | एॅलिएट | 02 ग्राम प्रति ली |
| 3 | पूर्व अंगमारी | एन्टरकॉल | 03 ग्राम प्रति ली |
| 4 | लेट ब्लाइट | मेलोडी ड्युओ | 600 ग्राम प्रति एकड़ |
| 5 | पत्तों पर सफेद धब्बे | बेलेटॉन | 200 ग्राम प्रति एकड़ |
| 6 | फल छेदक कीट | प्रोफेनोफॉस | 01 मि. ली प्रति ली |
| | | फेम | 0.25 मि. ली प्रति ली |
| 7 | पत्ती सुरंगक कीट | कॉन्फिडोर सुपर | 06 मि. ली प्रति 15 ली |
| 8 | माहू और फुदका | कॉन्फिडोर | 0.5 मि. ली प्रति ली |
| | | एक्टरा | 04 ग्राम प्रति 10 ली |
| 9 | थ्रिप्स | रिजेन्ट | 02 मि. ली प्रति ली |
| 10 | सफेद मक्खी | लॅनो | 02 मि. ली प्रति ली |
| | | पेगासस | 01 ग्राम प्रति ली |
| 11 | माईट | सल्फर | 02 ग्राम प्रति ली |
| | | मॅजिस्टर | 02 मि. ली प्रति ली |

पर्णकुंचन व मोजेक (विषाणु रोग)- पत्तियाँ नीचे की तरफ मुड़कर ँठ जाती हैं, रोगी पत्तियाँ छोटी, मोटी और खुरदरी हो जाती हैं। पत्तियों का रंग पीला पड़ जाता है, रोग के उग्र रूप धारण करने पर फूल भी नहीं बनते हैं। यह रोग सफेद मक्खियों के कारण होता है, इसलिये उनका नियंत्रण करना चाहिए। इसकी रोकथाम के लिये इमिडाक्लोप्रिड (100 मिलीलीटर प्रति 500 लीटर पानी) रोपाई के 3 सप्ताह बाद तथा आवश्यकतानुसार 15 दिन के अंतराल पर करें।

सिंचाई:- सर्दियों में 6 से 7 दिनों के फासले पर सिंचाई करें और गर्मियों के महीने में मिट्टी में नमी के मुताबिक 10-15 दिनों के फासले पर सिंचाई करें। सोके के बाद ज्यादा पानी देने से टमाटरों में दरारें आ जाती हैं। फूल निकलने के समय सिंचाई महत्त्वपूर्ण होती है। बहुत सारी जांचों के मुताबिक यह पता चला है कि हर पखवाड़े में आधा इंच सिंचाई करने से जड़ें ज्यादा फैलती हैं और इससे पैदावार भी अधिक हो जाती है।

खरपतवार नियंत्रण:- थोड़े थोड़े समय बाद गोडाई करते रहें और जड़ों को मिट्टी लगाएं। 45 दिनों तक खेत को नदीन रहित रखें। यदि नदीन नियंत्रण से बाहर हो जायें तो यह 70-90 प्रतिशत पैदावार कम कर देंगे। नदीनों पर नियंत्रण डालने और ज़मीन का तापमान कम करने के लिए पॉलीथीन की परत का प्रयोग कर सकते हैं।

फसल की कटाई:- पनीरी लगाने के 70 दिन बाद पौधे फल देना शुरू कर देते हैं। कटाई का समय इस बात पर निर्भर करता है कि फलों को दूरी वाले स्थानों पर लेकर जाना है या ताजे फलों को मंडी में ही बेचना है आदि। पके हरे टमाटर जिनका 1/4 भाग गुलाबी रंग का हो, लंबी दूरी वाले स्थानों पर लेकर जाने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। ज्यादातर सारे फल गुलाबी या लाल रंग में बदल जाते हैं, पर सख्त गुद्दे वाले टमाटरों को नज़दीक की मंडी में बेचा जा सकता है। अन्य उत्पाद बनाने और बीज तैयार करने के लिए पूरी तरह पके और नर्म गुद्दे वाले टमाटरों का प्रयोग किया जाता है।

टिपण्णी :- उपरोक्त सभी जाणकारीया हमारे अनुसंधान केंद्र पर किये गये प्रयोग पर आधारित है. भिन्न स्थानो पर भिन्न मौसम, भूमी प्रकार एवं ऋतू के कारण उपरोक्त जाणकारी मे बदलाव आ सकता है.

Tomato

Hybrids/ Varieties:- Apurva, Vijay

Climate:- Tomato can be cultivated throughout the year, but this crop cannot tolerate excessive moisture and frost. For this, the temperature is suitable between 18 degrees to 27 degrees centigrade. The ideal night temperature for fruiting should be between 15 degrees to 20 degrees centigrade. Excessive heat adversely affects the color and taste of the fruits.

Selection of land:- Loamy land rich in nutrients is suitable for its cultivation. For this, good drainage system is necessary.

Land preparation:- To get maximum production from advanced tomato cultivation, after doing the first plowing with a soil turning plow, do 2 to 3 plowings with a cultivator. If cultivator is not available, you can also use a harrow. After every ploughing, use a plough so that the clods that come out during ploughing break and the land becomes flat.

Seed treatment:- Apply 1.5-2 grams of Bavistin per kilogram of seed.

Time of planting – The time of planting tomatoes depends on the climate and temperature.

Rainy season – June – July, Autumn season – October – November, Spring season – January – February

Seed rate: 125 to 150 kg of seeds are required per hectare.

Planting distance: Before planting tomato seeds, make small beds whose size is 1 meter wide and length as per your requirement, then sow seeds in rows. It gets ready in 4-5 weeks.

Planting distance: Plant to plant – 45-60 cm, row to row – 60-90 cm.

Manure and Fertilizer:- While preparing the field, mix 20 to 25 tonnes of rotten cow dung manure or compost per hectare in the soil.

| Sr No | Chemical fertilizer per hectare | Nitrogen (kg) | Phosphorus (kg) | Potash (kg) |
|-------|---|---------------|-----------------|-------------|
| 1 | First dose 6-8 days after transplantation | 200 | 100 | 100 |
| 2 | Second dose 15-20 days after the first dose | 50 | 100 | 100 |
| 3 | Third dose 15-20 days after the second dose | 50 | 00 | 00 |
| 4 | After first fruit harvesting | 50 | 00 | 00 |

Disease and pest control :- Use of Fertera (Dupond) 4 kg per acre or Vertico (Syngenta) 2.5 kg per acre along with manure gives protection from sap sucking insects for 21 days.

| Sr No. | Diseases/Pests | Control | Quantity per liter of water |
|--------|-----------------------|----------------|-----------------------------|
| 1 | Fruit rot | Diethen M-45 | 02 gram per liter |
| 2 | Wilt | Aliett | 02 gram per liter |
| 3 | Early blight | Entercol | 03 gram per liter |
| 4 | Late blight | Melody Duo | 600 gram per acre |
| 5 | White spots on leaves | Belleton | 200 gram per acre |
| 6 | Fruit borer | Profenofos | 01 ml per liter |
| | Leaf miner | Fem | 0.25 ml per liter |
| 7 | Aphids and hoppers | Confidor Super | 06 ml per 15 liter |
| 8 | Thrips | Confidor | 0.5 ml per liter |
| | White fly | Actra | 04 gram per 10 liter |
| 9 | Mites | Regent | 02 ml per liter |
| 10 | Diseases/Pests | Lano | 02 ml per liter |
| | Fruit rot | Pegasus | 01 gram per liter |
| 11 | Wilt | Sulfur | 02 gram per liter |
| | | Magister | 02 ml per liter |

Leaf curl and mosaic (virus disease)- Leaves turn downwards and get twisted, the affected leaves become small, thick and rough. The colour of the leaves turns yellow, when the disease takes a severe form, even flowers do not form. This disease is caused by white flies, so they should be controlled. For its prevention, apply imidacloprid (100 ml per 500 liters of water) 3 weeks after transplanting and as per requirement at an interval of 15 days.

Irrigation:- In winters, irrigate at an interval of 6 to 7 days and in summer months, irrigate at an interval of 10-15 days according to the moisture in the soil. Excessive watering after soaking causes cracks in tomatoes. Irrigation is important at the time of flowering. According to many studies, it has been found that by irrigating half an inch every fortnight, the roots spread more and this also increases the yield.

Weed control:- Keep weeding at regular intervals and cover the roots with soil. Keep the field weed free for 45 days. If weeds get out of control, they will reduce the yield by 70-90%. Polythene layer can be used to control weeds and reduce soil temperature.

Harvesting:- Plants start bearing fruits 70 days after transplanting. Harvesting time depends on whether the fruits are to be transported to distant places or fresh fruits are to be sold in the market etc. Ripe green tomatoes with 1/4th of pink color are used for transporting to long distance places. Most of the fruits turn pink or red, but tomatoes with hard pulp can be sold in the nearby market. Fully ripe and soft pulp tomatoes are used for making other products and preparing seeds.

Note:- All the above information is based on the experiment conducted at our research center. The above information may vary due to different climate, soil type and seasons at different places.

ટમેટા

વર્ણસંકર/ જાતો:- અપુરવા, વિજય

આબોહવા:- ટમેટાંની ખેતી આખા વર્ષ દરમિયાન કરી શકાય છે, પરંતુ આ પાક વધુ પડતો ભેજ અને હિમ સહન કરી શકતો નથી. આ માટે, યોગ્ય તાપમાન 18 ડિગ્રી થી 27 ડિગ્રી સેન્ટીગ્રેડ વચ્ચે છે. ફળ બેસવા માટે રાત્રિનું આદર્શ તાપમાન 1૫°C અને ૨૦°C ની વચ્ચે હોવું જોઈએ. વધુ પડતી ગરમી ફળોના રંગ અને સ્વાદ પર પ્રતિકૂળ અસર કરે છે.

જમીનની પસંદગી:- પોષક તત્વોથી ભરપૂર ગોરાડુ જમીન તેની ખેતી માટે યોગ્ય છે. આ માટે, સારી ડ્રેનેજ સિસ્ટમ હોવી જરૂરી છે.

જમીનની તૈયારી:- ટમેટાંની અદ્યતન ખેતીમાંથી મહત્તમ ઉત્પાદન મેળવવા માટે, માટી ફેરવતા હળથી પહેલી વાર ખેડાણ કર્યા પછી, કલ્ટિવેટર વડે 2 થી 3 ખેડાણ કરો. જો કલ્ટિવેટર ઉપલબ્ધ ન હોય તો તમે હેરોનો પણ ઉપયોગ કરી શકો છો. દરેક ખેડાણ પછી, લેવલરનો ઉપયોગ કરો જેથી ખેડાણ દરમિયાન બહાર નીકળેલા ઢગલા તૂટી જાય. અને જમીન સમતલ થઈ જાય છે.

બીજ માવજત:- પ્રતિ કિલો બીજમાં ૧.૫-૨ ગ્રામ બાવિસ્ટિન નાખો.

રોપણીનો સમય: ટમેટાંના રોપણીનો સમય આબોહવા અને તાપમાન પર આધાર રાખે છે.

ચોમાસાની ઋતુ - જૂન - જુલાઈ, પાનખર ઋતુ - ઓક્ટોબર - નવેમ્બર, વસંત ઋતુ - જાન્યુઆરી - ફેબ્રુઆરી

બીજ દર: પ્રતિ હેક્ટર ૧૨૫ થી ૧૫૦ કિલો બીજની જરૂર પડે છે.

વાવેતરનું અંતર: ટમેટાંના બીજ વાવતા પહેલા, તમારી જરૂરિયાત મુજબ 1 મીટર પહોળા અને 1 મીટર લાંબા કદના નાના પથારી બનાવો અને પછી તેમાં હરોળમાં બીજ વાવો. તે 4-5 અઠવાડિયામાં તૈયાર થઈ જાય છે.

વાવેતરનું અંતર: છોડથી છોડ - ૪૫-૬૦ સે.મી., હરોળથી હરોળ - ૬૦-૮૦ સે.મી.

ખાતર અને ખાતર:- ખેતર તૈયાર કરતી વખતે, પ્રતિ હેક્ટર 20 થી 25 ટન સડેલું ગાયનું છાણ ખાતર અથવા ખાતર જમીનમાં ભેળવો.

| ના.. | પ્રતિ હેક્ટર રાસાયણિક ખાતરો | નાઇટ્રોજન (કિલો) | ફોસ્ફરસ (કિલો) | પોટાશ (કિલો) |
|------|--|------------------|----------------|--------------|
| 1 | રોપણી પછી 6-8 દિવસમાં પ્રથમ માત્રા | 200 | 100 | 100 |
| 2 | પ્રથમ ડોઝ પછી ૧૫-૨૦ દિવસ પછી બીજો ડોઝ | 50 | 100 | 100 |
| 3 | બીજા ડોઝ પછી ૧૫-૨૦ દિવસ પછી ત્રીજો ડોઝ | 50 | 00 | 00 |
| 4 | પ્રથમ ફળની લણણી પછી | 50 | 00 | 00 |

રોગ અને જીવાત નિયંત્રણ: રાસાયણિક દવાનો ડોઝ અને સમય:- ફર્ટિલા (ડુપોન્ડ) પ્રતિ એકર 4 કિલો અથવા વર્ટીકો (સિજેન્ટા) 2.5 કિલો પ્રતિ એકર ખાતર સાથે વાપરવાથી 21 દિવસ સુધી રસ યુસનારા જંતુઓથી રક્ષણ મળે છે.

| ના. | રોગો/જીવાતો | નિયંત્રણ | પ્રતિ લિટર પાણીનો જથ્થો |
|-----|------------------------|----------------|-----------------------------|
| ૧ | ફળનો સડો | ડાયથેન એમ-૪૫ | 02 ગ્રામ પ્રતિ લિટર |
| ૨ | વિલ્ટ | એલિયેટ | 02 ગ્રામ પ્રતિ લિટર |
| ૩ | ફળ પહેલાનો રોગ | એન્ટરકોલ | 03 ગ્રામ પ્રતિ લિટર |
| ૪ | પાછલો સુકારો | મેલોડી ડ્યુઓ | ૬૦૦ ગ્રામ પ્રતિ એકર |
| ૫ | પાંદડા પર સફેદ ફોલ્લીઓ | બેલેટન | 200 ગ્રામ પ્રતિ એકર |
| ૬ | ફળ ખાનાર જીવાત | પ્રોફેનોફોસ | ૦૧ મિનિટ. લી પર લી |
| | | ખ્યાતિ | ૦.૨૫ મિનિટ. લી પર લી |
| ૭ | પાન ખાણિયો જંતુ | કોન્ફિડોર સુપર | 06 મિનિટ ૧૫ લિટર પ્રતિ લિટર |
| ૮ | મોલો અને તીતીઘોડા | કોન્ફિડોર | ૦.૫ મિનિટ. લી પર લી |
| | | એક્ટ્રા | 04 ગ્રામ પ્રતિ 10 લિટર |
| 9 | શ્રીપ્સ | રીજન્ટ | ૦૨ મિનિટ લી પર લી |
| ૧૦ | સફેદ માખી | લાનો | ૦૨ મિનિટ લી પર લી |
| | | પેગાસસ | 01 ગ્રામ પ્રતિ લિટર |
| 11 | શકે છે | સલ્ફર | 02 ગ્રામ પ્રતિ લિટર |
| | | મેજિસ્ટર | ૦૨ મિનિટ લી પર લી |

પાંદડાનો વાંકડિયાપણું અને મોઝેક (વાયરસ રોગો) - પાંદડા નીચે તરફ વળે છે અને વળી જાય છે, અસરગ્રસ્ત પાંદડા નાના, જાડા અને ખરબચડા બની જાય છે. પાંદડાઓનો રંગ પીળો થઈ જાય છે અને જો રોગ ગંભીર બને છે તો ફૂલો પણ ખીલતા નથી. આ રોગ સફેદ માખીઓથી થાય છે, તેથી તેનું નિયંત્રણ કરવું જોઈએ. આને રોકવા માટે, રોપણી પછી 3 અઠવાડિયા પછી અને જરૂરિયાત મુજબ 15 દિવસના અંતરાલ પર ઇમિડાક્લોપ્રિડ (500 લિટર પાણીમાં 100 મિલી) નો ઉપયોગ કરો.

સિંચાઈ:- શિયાળામાં, 6 થી 7 દિવસના અંતરે અને ઉનાળાના મહિનાઓમાં, જમીનમાં ભેજના આધારે 10-15 દિવસના અંતરે સિંચાઈ કરો. પલાળ્યા પછી વધુ પડતું પાણી આપવાથી ટમેટાંમાં તિરાડો પડે છે. ફૂલો આવે ત્યારે સિંચાઈ ખૂબ જ મહત્વપૂર્ણ છે. ઘણા અભ્યાસો અનુસાર, એવું જાણવા મળ્યું છે કે દર પખવાડિયે અડધો ઇંચ સિંચાઈ કરવાથી મૂળ વધુ ફેલાય છે અને તેનાથી ઉપજમાં પણ વધારો થાય છે.

નીંદણ નિયંત્રણ:- નિયમિત અંતરાલે નીંદણ કાઢતા રહો અને મૂળને માટીથી ઢાંકી દો. ખેતરને ૪૫ દિવસ સુધી નીંદણમુક્ત રાખો. જો નીંદણ નિયંત્રણ બહાર વધે તો તે ઉપજમાં 70-90 ટકાનો ઘટાડો કરી શકે છે. નીંદણને નિયંત્રિત કરવા અને માટીનું તાપમાન ઘટાડવા માટે પોલિઇથિલિનના સ્તરનો ઉપયોગ કરી શકાય છે.

પાકની કાપણી:- રોપાઓ રોપ્યાના 70 દિવસ પછી છોડ ફળ આપવાનું શરૂ કરે છે. કાપણીનો સમય ફળોને દૂરના સ્થળોએ લઈ જવાના છે કે તાજા ફળો બજારમાં જ વેચવાના છે વગેરે પર આધાર રાખે છે. લાંબા અંતરના સ્થળોએ પરિવહન માટે 1/4 ભાગ ગુલાબી રંગના પાકેલા લીલા ટમેટાંનો ઉપયોગ થાય છે. મોટાભાગના ફળો ગુલાબી કે લાલ થઈ જાય છે, પરંતુ કઠણ પલ્પવાળા ટમેટાં નજીકના બજારમાં વેચી શકાય છે. સંપૂર્ણપણે પાકેલા અને નરમ પલ્પવાળા ટમેટાંનો ઉપયોગ અન્ય ઉત્પાદનો બનાવવા અને બીજ તૈયાર કરવા માટે થાય છે.

નોંધ:- ઉપરોક્ત બધી માહિતી અમારા સંશોધન કેન્દ્રમાં કરવામાં આવેલા પ્રયોગો પર આધારિત છે. ઉપરોક્ત માહિતી અલગ અલગ સ્થળોએ અલગ અલગ આબોહવા, જમીનના પ્રકાર અને ઋતુઓને કારણે બદલાઈ શકે છે.

టమోటా
వైబ్రిడ్లు/ రకాలు:- అపుర్య, విజయ

వాతావరణం:- టమోటాను ఏడాది పొడవునా సాగు చేయవచ్చు. కానీ ఈ పంట అధిక తేమ మరియు మంచును తట్టుకోలేదు. దీనికి, తగిన ఉష్ణోగ్రత 18 డిగ్రీల నుండి 27 డిగ్రీల సెంటీగ్రేడ్ మధ్య ఉంటుంది. పండ్లు ఏర్పడటానికి అనువైన రాత్రి ఉష్ణోగ్రత 15°C మరియు 20°C మధ్య ఉండాలి. అధిక వేడి పండ్ల రంగు మరియు రుచిని ప్రతికూలంగా ప్రభావితం చేస్తుంది.

భూమి ఎంపిక:- పోషకాలు అధికంగా ఉండే లోమీ నేల దీని సాగుకు అనుకూలంగా ఉంటుంది. దీనికోసం, మంచి డ్రైనేజీ వ్యవస్థను కలిగి ఉండటం అవసరం.

భూమి తయారీ:- ఆధునిక టమోటా సాగు నుండి గరిష్ట దిగుబడిని పొందడానికి, మొదట నేలను తిప్పే నాగలితో దున్నిన తర్వాత, కల్చివేటర్ తో 2 నుండి 3 దున్నండి. కల్చివేటర్ అందుబాటులో లేకపోతే మీరు హారోను కూడా ఉపయోగించవచ్చు. ప్రతిసారి దున్నిన తర్వాత, దున్నేటప్పుడు బయటకు వచ్చే గడ్డలు విరిగిపోయేలా లెవలర్ ను ఉపయోగించండి. మరియు భూమి సమతలంగా మారుతుంది.

వితన శుద్ధి:- కిలో వితనానికి 1.5-2 గ్రాముల బాప్టిస్ట్ వేయండి.
నాటుకునే సమయం: టమోటా నాటుకునే సమయం వాతావరణం మరియు ఉష్ణోగ్రతపై ఆధారపడి ఉంటుంది.
వర్షాకాలం - జూన్ - జూలై, శరదృతువు - అక్టోబర్ - నవంబర్, వసంతకాలం - జనవరి - ఫిబ్రవరి
వితన రేటు: హెక్టారుకు 125 నుండి 150 కిలోల వితనాలు అవసరం.

నాటడం దూరం: టమోటా వితనాలను నాటడానికి ముందు, మీ అవసరానికి అనుగుణంగా 1 మీటర్ వెడల్పు మరియు 1 మీటర్ పొడవు గల చిన్న పడకలను తయారు చేసి, వాటిలో వరుసగా వితనాలను విత్తండి. ఇది 4-5 వారాలలో సిద్ధంగా ఉంటుంది.
నాటడం దూరం: మొక్క నుండి మొక్కకు - 45-60 సెం.మీ., వరుస నుండి వరుసకు - 60-90 సెం.మీ.

ఎరువు మరియు ఎరువులు:- పొలాన్ని సిద్ధం చేసేటప్పుడు, హెక్టారుకు 20 నుండి 25 టన్నుల కుళ్ళిన ఆవు పేడ ఎరువు లేదా కంపోస్టును నేలలో కలపండి.

| లేదు. | హెక్టారుకు రసాయన ఎరువులు | నత్రజని (కి.గ్రా) | భాస్వరం (కి.గ్రా) | ఫాస్ఫాస్ (కిలోలు) |
|-------|---|-------------------|-------------------|-------------------|
| 1. | నాట్లు వేసిన 6-8 రోజులలోపు మొదటి మోతాదు | 200లు | 100లు | 100లు |
| 2 | మొదటి డోసు తర్వాత 15-20 రోజుల తర్వాత రెండవ డోసు | 50లు | 100లు | 100లు |
| 3 | రెండవ డోసు తర్వాత 15-20 రోజుల తర్వాత మూడవ డోసు | 50లు | 0 | 0 |
| 4 | మొదటి పండ్ల కోత తర్వాత | 50 | 00 | 00 |

వ్యాధి మరియు తెగులు నియంత్రణ: రసాయన ఔషధం యొక్క మోతాదు మరియు సమయం:- ఎకరానికి 4 కిలోల ఫెర్టెరా (డూసాండ్) లేదా ఎకరానికి 2.5 కిలోల వెర్మికో (సింజెంటా) ను ఎరువుతో కలిపి వాడటం వలన 21 రోజుల పాటు రసం పీల్చే కీటకాల నుండి రక్షణ లభిస్తుంది.

| లేదు. | వ్యాధులు/ తెగులు | నియంత్రణ | లీటరు నీటి పరిమాణం |
|-------|-------------------------|-----------------|------------------------------|
| 1. | పండ్ల తెగులు | డిథానే M-45 | లీటరుకు 02 గ్రాములు |
| 2 | విల్లీ | అలియట్ | లీటరుకు 02 గ్రాములు |
| 3 | ముడత ముందు | ఎంటర్కాల్ | లీటరుకు 03 గ్రాములు |
| 4 | లేట్ బ్లైట్ | మెలొడి డ్యూయో | ఎకరానికి 600 గ్రా. |
| 5 | ఆకులపై తెల్లని మచ్చలు | బెలేటన్ | ఎకరానికి 200 గ్రా. |
| 6 | పండ్ల తొలుచు పురుగు | ప్రోఫెనోఫోస్ | 01 ని.మి. లీ పర్ లీ |
| | | కీర్తి | 0.25 ని.మి. లీ పర్ లీ |
| 7 | ఆకు మెనర్ పురుగు | కాన్సిడర్ సూపర్ | 06 ని.మి. లీటరుకు 15 లీటర్లు |
| 8 | అఫిడ్స్ మరియు హాస్పర్స్ | కాన్సిడర్ | 0.5 ని.మి. లీ పర్ లీ |
| | | ఆక్టా | 10 లీటర్లకు 04 గ్రాములు |
| 9 | త్రిప్స్ | రిజెంట్ | 02 ని.మి. లీ పర్ లీ |
| 10 | తెల్ల ఈగ | లాస్ | 02 ని.మి. లీ పర్ లీ |
| | | పెగాసస్ | లీటరుకు 01 గ్రాములు |
| 11 | ఉండవచ్చు | సల్యర్ | లీటరుకు 02 గ్రాములు |
| | | మాజిస్టర్ | 02 ని.మి. లీ పర్ లీ |

ఆకు ముడతలు మరియు మొజాయిక్ (వైరల్ వ్యాధులు) - ఆకులు క్రిందికి వంగి, వంకరగా మారుతాయి, ప్రభావిత ఆకులు చిన్నవిగా, మందంగా మరియు గరుకుగా మారుతాయి. ఆకుల రంగు పసుపు రంగులోకి మారుతుంది మరియు వ్యాధి తీవ్రమైతే పువ్వులు కూడా వికసించవు. ఈ వ్యాధి తెల్ల ఈగల వల్ల వస్తుంది, కాబట్టి వాటిని నియంత్రించాలి. దీనిని నివారించడానికి, నాటిని 3 వారాల తర్వాత మరియు అవసరమైన విధంగా 15 రోజుల విరామంతో ఇమిడాక్లోప్రిడ్ (500 లీటర్ల నీటికి 100 మి.లీ.) వాడండి.

నీటిపారుదల:- శీతాకాలంలో, 6 నుండి 7 రోజుల వ్యవధిలో నీరు పెట్టండి మరియు వేసవి నెలల్లో, నేలలోని తేమను బట్టి 10-15 రోజుల వ్యవధిలో నీరు పెట్టండి. నానబెట్టిన తర్వాత అధికంగా నీరు పెట్టడం వల్ల టమోటాలు పగుళ్లు ఏర్పడతాయి. పుష్పించే సమయంలో నీటిపారుదల ముఖ్యం. అనేక అధ్యయనాల ప్రకారం, ప్రతి పక్షం రోజులకు అర అంగుళం నీరు పెట్టడం ద్వారా, వేర్లు ఎక్కువగా వ్యాపిస్తాయి మరియు దీనివల్ల దిగుబడి కూడా పెరుగుతుందని కనుగొనబడింది.

కలుపు నియంత్రణ:- క్రమం తప్పకుండా కలుపు తీయుట కొనసాగించండి మరియు వేర్లను మట్టితో కప్పండి. పొలంలో 45 రోజుల పాటు కలుపు మొక్కలు లేకుండా ఉంచండి. కలుపు మొక్కలు అదుపు తప్పితే అవి దిగుబడిని 70-90 శాతం తగ్గిస్తాయి. కలుపు మొక్కలను నియంత్రించడానికి మరియు నేల ఉష్ణోగ్రతను తగ్గించడానికి పాలిథిలీన్ పొరను ఉపయోగించవచ్చు.

పంట కోత:- మొక్కలు నాటిని 70 రోజుల తర్వాత పండ్లు ఇవ్వడం ప్రారంభిస్తాయి. పంట కోసే సమయం పండ్లను సుదూర ప్రాంతాలకు తీసుకెళ్లా లేదా తాజా పండ్లను మార్కెట్ లోనే అమ్మాలా అనే దానిపై ఆధారపడి ఉంటుంది. పండిన ఆకుపచ్చ టమోటాలలో 1/4 వంతు గులాబీ రంగులో ఉంటాయి, వీటిని సుదూర ప్రాంతాలకు రవాణా చేయడానికి ఉపయోగిస్తారు. చాలా పండ్లు గులాబీ లేదా ఎరుపు రంగులోకి మారుతాయి, కానీ గట్టి గుళ్ళు కలిగిన టమోటాలను సమీపంలోని మార్కెట్ లో అమ్మవచ్చు. పూర్తిగా పండిన మరియు మృదువైన గుళ్ళు కలిగిన టమోటాలను ఇతర ఉత్పత్తులను తయారు చేయడానికి మరియు వితనాలను తయారు చేయడానికి ఉపయోగిస్తారు.

గమనిక:- పైన పేర్కొన్న సమాచారమంతా మా పరిశోధన కేంద్రంలో నిర్వహించిన ప్రయోగాల ఆధారంగా ఇవ్వబడింది. పైన పేర్కొన్న సమాచారం వేరేవారు ప్రచోదనలో వేరేవారు వాతావరణం, నేల రకం మరియు రుతువుల కారణంగా మారవచ్చు.

**ಟೊಮೆಟೊ
ಹೈಬ್ರಿಡ್‌ಗಳು/ ಪ್ರಭೇದಗಳು:- ಅಪೂರ್ವ, ವಿಜಯ್**

ಹವಾಮಾನ:- ಟೊಮೆಟೊವನ್ನು ವರ್ಷಪೂರ್ತಿ ಬೆಳೆಸಬಹುದು, ಆದರೆ ಈ ಬೆಳೆ ಅತಿಯಾದ ತೇವಾಂಶ ಮತ್ತು ಹಿಮವನ್ನು ಸಹಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ಇದಕ್ಕೆ ಸೂಕ್ತವಾದ ತಾಪಮಾನವು 18 ಡಿಗ್ರಿಯಿಂದ 27 ಡಿಗ್ರಿ ಸೆಂಟಿಗ್ರೇಡ್ ವರೆಗೆ ಇರುತ್ತದೆ. ಹಣ್ಣು ಮೂಡಲು ಸೂಕ್ತವಾದ ರಾತ್ರಿ ತಾಪಮಾನವು 15°C ಮತ್ತು 20°C ನಡುವೆ ಇರಬೇಕು. ಅತಿಯಾದ ಶಾಖವು ಹಣ್ಣುಗಳ ಬಣ್ಣ ಮತ್ತು ರುಚಿಯ ಮೇಲೆ ಪ್ರತಿಕೂಲ ಪರಿಣಾಮ ಬೀರುತ್ತದೆ.

ಭೂಮಿಯ ಆಯ್ಕೆ:- ಪೌಷ್ಟಿಕಾಂಶಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಲೋಮಿ ಮಣ್ಣು ಇದರ ಕೃಷಿಗೆ ಸೂಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಇದಕ್ಕಾಗಿ, ಉತ್ತಮ ಒಳಚರಂಡಿ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವುದು ಅವಶ್ಯಕ.

ಭೂಮಿ ಸಿದ್ಧತೆ:- ಮುಂದುವರಿದ ಟೊಮೆಟೊ ಕೃಷಿಯಿಂದ ಗರಿಷ್ಠ ಇಳುವರಿಯನ್ನು ಪಡೆಯಲು, ಮೊದಲು ಮಣ್ಣನ್ನು ತಿರುಗಿಸುವ ನೆಗೆಲಿನಿಂದ ಉಳುಮೆ ಮಾಡಿದ ನಂತರ, ಕಲ್ಟಿವೇಟರ್ ಬಳಸಿ 2 ರಿಂದ 3 ಉಳುಮೆ ಮಾಡಿ. ಕಲ್ಟಿವೇಟರ್ ಲಭ್ಯವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ನೀವು ಹ್ಯಾರೋವನ್ನು ಸಹ ಬಳಸಬಹುದು. ಪ್ರತಿ ಬಾರಿ ಉಳುಮೆ ಮಾಡಿದ ನಂತರ, ಉಳುಮೆ ಮಾಡುವಾಗ ಹೊರಬರುವ ಉಂಡೆಗಳನ್ನು ಒಡೆಯಲು ಲೆವೆಲರ್ ಬಳಸಿ. ಮತ್ತು ಭೂಮಿಯು ಸಮತಟ್ಟಾಗುತ್ತದೆ.

ಬೀಜೋಪಚಾರ:- ಪ್ರತಿ ಕಿಲೋಗ್ರಾಂ ಬೀಜಕ್ಕೆ 1.5-2 ಗ್ರಾಂ ಬಾವಿಸ್ಪಿನ್ ಅನ್ನು ಹಾಕಿ.
ನಾಟಿ ಸಮಯ: ಟೊಮೆಟೊ ನಾಟಿ ಸಮಯವು ಹವಾಮಾನ ಮತ್ತು ತಾಪಮಾನವನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿರುತ್ತದೆ.
ಮಳೆಗಾಲ - ಜೂನ್ - ಜುಲೈ, ಶರತ್ಕಾಲ - ಅಕ್ಟೋಬರ್ - ನವೆಂಬರ್, ವಸಂತಕಾಲ - ಜನವರಿ - ಫೆಬ್ರವರಿ

ಬೀಜದ ಪ್ರಮಾಣ: ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 125 ರಿಂದ 150 ಕೆಜಿ ಬೀಜಗಳು ಬೇಕಾಗುತ್ತವೆ.
ನಾಟಿ ದೂರ: ಟೊಮೆಟೊ ಬೀಜಗಳನ್ನು ನೆಡುವ ಮೊದಲು, ನಿಮ್ಮ ಅವಶ್ಯಕತೆಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ 1 ಮೀಟರ್ ಅಗಲ ಮತ್ತು 1 ಮೀಟರ್ ಉದ್ದದ ಸಣ್ಣ ಹಾಸಿಗೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ ನಂತರ ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಸಾಲು ಸಾಲಾಗಿ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತಬೇಕು. ಇದು 4-5 ವಾರಗಳಲ್ಲಿ ಸಿದ್ಧವಾಗುತ್ತದೆ.
ನೆಟ್ಟು ಅಂತರ: ಸಸ್ಯದಿಂದ ಸಸ್ಯಕ್ಕೆ - 45-60 ಸೆಂ.ಮೀ., ಸಾಲಿನಿಂದ ಸಾಲಿಗೆ - 60-90 ಸೆಂ.ಮೀ.

ಗೊಬ್ಬರ ಮತ್ತು ಗೊಬ್ಬರ:- ಹೊಲವನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವಾಗ, ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 20 ರಿಂದ 25 ಟನ್ ಕೊಳೆತ ಹಸುವಿನ ಸಗಣಿ ಗೊಬ್ಬರ ಅಥವಾ ಕಾಂಪೋಸ್ಟ್ ಅನ್ನು ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಮಿಶ್ರಣ ಮಾಡಿ.

| ಇಲ್ಲ. | ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ ರಾಸಾಯನಿಕ ಗೊಬ್ಬರಗಳು | ಸಾರಜನಕ (ಕೆಜಿ) | ರಂಜಕ (ಕೆಜಿ) | ಪೊಟಾಶ್ (ಕೆಜಿ) |
|-------|---|---------------|-------------|---------------|
| 1 | ನಾಟಿ ಮಾಡಿದ 6-8 ದಿನಗಳ ಒಳಗೆ ಮೊದಲ ಡೋಸ್ | 200 | 100 (100) | 100 (100) |
| 2 | ಮೊದಲ ಡೋಸ್ ನಂತರ 15-20 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಎರಡನೇ ಡೋಸ್ | 50 | 100 (100) | 100 (100) |
| 3 | ಎರಡನೇ ಡೋಸ್ ನಂತರ 15-20 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಮೂರನೇ ಡೋಸ್ | 50 | 00 | 00 |
| 4 | ಮೊದಲ ಹಣ್ಣಿನ ಕೊಯ್ಲಿನ ನಂತರ | 50 | 00 | 00 |

ರೋಗ ಮತ್ತು ಕೀಟ ನಿಯಂತ್ರಣ: ರಾಸಾಯನಿಕ ಔಷಧದ ಪ್ರಮಾಣ ಮತ್ತು ಸಮಯ:- ಎಕರೆಗೆ 4 ಕೆಜಿ ಫೆರ್ಟಿಲಿಟಿ (ಡುಪಾಂಡ್) ಅಥವಾ 2.5 ಕೆಜಿ ವರ್ಟಿಕೊ (ಸಿಂಜೆಂಟಾ) ಅನ್ನು ಗೊಬ್ಬರದೊಂದಿಗೆ ಬಳಸುವುದರಿಂದ 21 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ರಸ ಹೀರುವ ಕೀಟಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಣೆ ಸಿಗುತ್ತದೆ.

| ಇಲ್ಲ. | ರೋಗಗಳು/ ಕೀಟಗಳು | ನಿಯಂತ್ರಣ | ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್ ನೀರಿಗೆ ಪ್ರಮಾಣ |
|-------|----------------------------|-----------------|-----------------------------------|
| 1 | ಹಣ್ಣಿನ ಕೊಳೆತ | ಡಿಥೇನ್ M-45 | ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 02 ಗ್ರಾಂ |
| 2 | ವಿಲ್ಡ್ | ಅಲಿಯಟ್ | ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 02 ಗ್ರಾಂ |
| 3 | ರೋಗ ಪೂರ್ವ | ಎಂಟರ್‌ಕಾಲ್ ಮಾಡಿ | ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 03 ಗ್ರಾಂ |
| 4 | ಅಂತ್ಯ ರೋಗ | ಮೆಲೋಡಿ ಜೋಡಿ | ಎಕರೆಗೆ 600 ಗ್ರಾಂ. |
| 5 | ಎಲೆಗಳ ಮೇಲೆ ಬಿಳಿ ಚುಕ್ಕೆಗಳು | ಬೆಲೆಟನ್ | ಎಕರೆಗೆ 200 ಗ್ರಾಂ. |
| 6 | ಹಣ್ಣು ಕೊರೆಯುವ ಕೀಟ | ಪ್ರೊಫೆನೋಪ್ರೋಸ್ | 01 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ |
| | | ಖ್ಯಾತಿ | 0.25 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ |
| 7 | ಎಲೆ ಸುಲಿಯುವ ಕೀಟ | ಕಾನ್ವಿಡರ್ ಸೂಪರ್ | 06 ನಿಮಿಷ. ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 15 ಲೀಟರ್ |
| 8 | ಗಿಡಹೇನುಗಳು ಮತ್ತು ಹಾಪರ್‌ಗಳು | ಕಾನ್ವಿಡರ್ | 0.5 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ |
| | | ಆಕ್ಸಾಜ್ | 10 ಲೀಟರ್‌ಗೆ 04 ಗ್ರಾಂ |
| 9 | ಥ್ರಿಪ್ಸ್ ನುಸಿ | ರಿಜೆಂಟ್ | 02 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ |
| 10 | ಬಿಳಿ ನೋಣ | ಲಾನೋ | 02 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ |
| | | ಪೆಗಾಸಸ್ | ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 01 ಗ್ರಾಂ |
| | ಇರಬಹುದು | ಸಲ್ಫರ್ | ಪ್ರತಿ ಲೀಟರ್‌ಗೆ 02 ಗ್ರಾಂ |
| | | ಮಾಸ್ಟರ್ | 02 ನಿಮಿಷ. ಲೀ ಪರ್ ಲೀ |

ಎಲೆ ಸುರುಳಿ ಮತ್ತು ಮೊಸಾಯಿಕ್ (ವೈರಲ್ ರೋಗಗಳು) - ಎಲೆಗಳು ಕೆಳಕ್ಕೆ ಸುರುಳಿಯಾಗಿ ತಿರುಚಲ್ಪಡುತ್ತವೆ, ಪೀಡಿತ ಎಲೆಗಳು ಚಿಕ್ಕದಾಗಿರುತ್ತವೆ, ದಪ್ಪವಾಗಿರುತ್ತವೆ ಮತ್ತು ಒರಟಾಗಿರುತ್ತವೆ. ಎಲೆಗಳ ಬಣ್ಣ ಹಳದಿ ಬಣ್ಣಕ್ಕೆ ತಿರುಗುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ರೋಗ ತೀವ್ರಗೊಂಡರೆ ಹೊವುಗಳು ಸಹ ಅರಳುವುದಿಲ್ಲ. ಈ ರೋಗವು ಬಿಳಿ ನೋಣಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುತ್ತದೆ, ಆದ್ದರಿಂದ ಅವುಗಳನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಿಸಬೇಕು. ಇದನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟಲು, ನಾಟಿ ಮಾಡಿದ 3 ವಾರಗಳ ನಂತರ ಮತ್ತು ಅಗತ್ಯವಿರುವಂತೆ 15 ದಿನಗಳ ಮಧ್ಯಂತರದಲ್ಲಿ ಇಮಿಡಾಕ್ಲೋಪ್ರಿಡ್ (500 ಲೀಟರ್ ನೀರಿಗೆ 100 ಮಿಲಿ) ಬಳಸಿ.

ನೀರಾವರಿ:- ಚಳಿಗಾಲದಲ್ಲಿ, 6 ರಿಂದ 7 ದಿನಗಳ ಅಂತರದಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಬೇಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ, ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿರುವ ತೇವಾಂಶವನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿ 10-15 ದಿನಗಳ ಅಂತರದಲ್ಲಿ ನೀರುಹಾಕುವುದು. ನೆನೆಸಿದ ನಂತರ ಅತಿಯಾದ ನೀರುಹಾಕುವುದು ಟೊಮೆಟೊದಲ್ಲಿ ಬಿರುಕುಗಳನ್ನು ಉಂಟುಮಾಡುತ್ತದೆ. ಹೂಬಿಡುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ನೀರಾವರಿ ಮುಖ್ಯ. ಅನೇಕ ಅಧ್ಯಯನಗಳ ಪ್ರಕಾರ, ಪ್ರತಿ ಹದಿನೈದು ದಿನಗಳಿಗೊಮ್ಮೆ ಅರ್ಧ ಇಂಚು ನೀರುಣಿಸುವುದರಿಂದ ಬೇರುಗಳು ಹೆಚ್ಚು ಹರಡುತ್ತವೆ ಮತ್ತು ಇದು ಇಳುವರಿಯನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತದೆ ಎಂದು ಕಂಡುಬಂದಿದೆ.

ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ:- ನಿಯಮಿತವಾಗಿ ಕಳೆ ಕೀಳುತ್ತಾ ಇರಿ ಮತ್ತು ಬೇರುಗಳನ್ನು ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ಮುಚ್ಚಿ. 45 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ಹೊಲದಲ್ಲಿ ಕಳೆಗಳಿಲ್ಲದೆ ಇರಿಸಿ. ಕಳೆಗಳು ನಿಯಂತ್ರಣ ತಪ್ಪಿದರೆ ಅವು ಇಳುವರಿಯನ್ನು ಶೇಕಡಾ 70-90 ರಷ್ಟು ಕಡಿಮೆ ಮಾಡಬಹುದು. ಕಳೆಗಳನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಿಸಲು ಮತ್ತು ಮಣ್ಣಿನ ಉಷ್ಣತೆಯನ್ನು ಕಡಿಮೆ ಮಾಡಲು ಪಾಲಿಥಿಲೀನ್ ಪದರವನ್ನು ಬಳಸಬಹುದು.

ಬೆಳೆ ಕೊಯ್ಲು:- ಸಸಿಗಳನ್ನು ನೆಟ್ಟು 70 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಸಸ್ಯಗಳು ಫಲ ನೀಡಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುತ್ತವೆ. ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನು ದೂರದ ಸ್ಥಳಗಳಿಗೆ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಹೋಗಬೇಕೇ ಅಥವಾ ತಾಜಾ ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಮಾರುಕಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿಯೇ ಮಾರಾಟ ಮಾಡಬೇಕೇ ಇತ್ಯಾದಿಗಳ ಮೇಲೆ ಕೊಯ್ಲು ಸಮಯ ಅವಲಂಬಿತವಾಗಿರುತ್ತದೆ. 1/4 ಭಾಗ ಗುಲಾಬಿ ಬಣ್ಣದ ಮಾಗಿದ ಹಸಿರು ಟೊಮೆಟೊಗಳನ್ನು ದೂರದ ಸ್ಥಳಗಳಿಗೆ ಸಾಗಿಸಲು ಬಳಸಲಾಗುತ್ತದೆ. ಹೆಚ್ಚಿನ ಹಣ್ಣುಗಳು ಗುಲಾಬಿ ಅಥವಾ ಕೆಂಪು ಬಣ್ಣಕ್ಕೆ ತಿರುಗುತ್ತವೆ, ಆದರೆ ಗಟ್ಟಿಯಾದ ತಿರುಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಟೊಮೆಟೊಗಳನ್ನು ಹತ್ತಿರದ ಮಾರುಕಟ್ಟೆಯಲ್ಲಿ ಮಾರಾಟ ಮಾಡಬಹುದು. ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಮಾಗಿದ ಮತ್ತು ಮೃದುವಾದ ತಿರುಳಿನ ಟೊಮೆಟೊಗಳನ್ನು ಇತರ ಉತ್ಪನ್ನಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಮತ್ತು ಬೀಜಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಬಳಸಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಗಮನಿಸಿ:- ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಮಾಹಿತಿಯು ನಮ್ಮ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ. ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ವಿವಿಧ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿನ ಹವಾಮಾನ, ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ ಮತ್ತು ಋತುಮಾನಗಳಿಂದಾಗಿ ಬದಲಾಗಬಹುದು.

টমেটো
হাইব্ৰিডাৰ/ ভাৰিটস:- পূৰ্ব, বিজয়

জলবায়ু:- টমেটোৰ খেতি গোটেই বছৰটো কৰিব পাৰি, কিন্তু এই শস্যই অত্যধিক আৰ্দ্ৰতা আৰু হিম সহ্য কৰিব নোৱাৰে। ইয়াৰ বাবে উপযুক্ত উষ্ণতা ১৮ ডিগ্ৰীৰ পৰা ২৭ ডিগ্ৰী চেন্টিগ্ৰেডৰ ভিতৰত। ফল-মূল স্থাপনৰ বাবে ৰাতিৰ আদৰ্শ উষ্ণতা ১৫ ডিগ্ৰী চেলছিয়াছৰ পৰা ২০ ডিগ্ৰী চেলছিয়াছৰ ভিতৰত হ'ব লাগে। অত্যধিক উত্তাপে ফলৰ ৰং আৰু সোৱাদত বিৰূপ প্ৰভাৱ পেলায়।

ভূমি নিৰ্বাচন:- পুষ্টিৰ উপাদান সমৃদ্ধ লোমীয়া মাটি ইয়াৰ খেতিৰ বাবে উপযোগী। ইয়াৰ বাবে এটা ভাল পানী নিষ্কাশন ব্যৱস্থা থকাটো প্ৰয়োজনীয়।

মাটি প্ৰস্তুতি:- উন্নত টমেটো খেতিৰ পৰা সৰ্বাধিক উৎপাদন পাবলৈ প্ৰথমে মাটি ঘূৰোৱা নাওলেৰে হাল বোৱাৰ পিছত খেতিয়কৰ সহায়ত ২ৰ পৰা ৩টা হাল বোৱা কৰিব লাগে। যদি খেতিয়ক উপলব্ধ নহয় তেন্তে আপুনি হাৰো ব্যৱহাৰ কৰিব পাৰে। প্ৰতিবাৰ হাল বোৱাৰ পিছত লেভেলৰ ব্যৱহাৰ কৰিব লাগে যাতে হাল বোৱাৰ সময়ত ওলোৱা ডালবোৰ ভাঙি যায়। আৰু মাটি সমতল হৈ পৰে।

বীজৰ শোধন:- প্ৰতি কিলোগ্ৰাম বীজত ১.৫-২ গ্ৰাম বাভিষ্টিন প্ৰয়োগ কৰিব লাগে।
টমেটো ৰোপণৰ সময়: টমেটো ৰোপণৰ সময় জলবায়ু আৰু উষ্ণতাৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰে।
বাৰিষা ঋতু - জুন - জুলাই, শৰৎ ঋতু - অক্টোবৰ - নৱেম্বৰ, বসন্ত বতৰ - জানুৱাৰী - ফেব্ৰুৱাৰী
বীজৰ হাৰ: প্ৰতি হেক্টৰত ১২৫ৰ পৰা ১৫০ কিলোগ্ৰাম বীজৰ প্ৰয়োজন হয়।

ৰোপণৰ দূৰত্ব: টমেটোৰ গুটি ৰোপণৰ আগতে আপোনাৰ প্ৰয়োজন অনুসৰি ১ মিটাৰ বহল আৰু ১ মিটাৰ দীঘল আকাৰৰ সৰু সৰু বিচনা সাজি তাৰ পিছত শাৰী শাৰীকৈ বীজ সিঁচিব লাগে। ৪-৫ সপ্তাহত সাজু হৈ উঠে।

ৰোপণৰ দূৰত্ব: গছৰ পৰা ৰোপণলৈ - ৪৫-৬০ চে.মি., শাৰীৰ পৰা শাৰীলৈ - ৬০-৯০ চে.মি.
গোবৰ আৰু সাৰ:- পথাৰ প্ৰস্তুত কৰাৰ সময়ত প্ৰতি হেক্টৰ মাটিত ২০ৰ পৰা ২৫ টন পচি যোৱা গৰুৰ গোবৰ বা পচন সাৰ মিহলাই দিব লাগে।

| নহয়। | প্ৰতি হেক্টৰত ৰাসায়নিক সাৰ | নাইট্ৰজেন (কিলোগ্ৰাম) | ফছফৰাছ (কিলোগ্ৰাম) | পটাছ (কিলোগ্ৰাম) |
|-------|--|-----------------------|--------------------|------------------|
| 1 | প্ৰতিস্থাপনৰ ৬-৮ দিনৰ ভিতৰত প্ৰথম মাত্ৰা | 200 | 100 | 100 |
| 2 | প্ৰথম ড'জৰ ১৫-২০ দিনৰ পিছত ২য় ড'জ | 50 | 100 | 100 |
| 3 | দ্বিতীয় মাত্ৰাৰ ১৫-২০ দিনৰ পিছত তৃতীয় মাত্ৰা | 50 | 00 | 00 |
| 4 | প্ৰথম ফল চপোৱাৰ পিছত | 50 | 00 | 00 |

ৰোগ আৰু কীট-পতংগ নিয়ন্ত্ৰণ: ৰাসায়নিক ঔষধৰ মাত্ৰা আৰু সময়:- প্ৰতি একৰত ৪ কেজিকৈ ফেৰটেৰা (ডুপণ্ড) বা ভেটিকো (Syngenta) ২.৫ কেজি প্ৰতি একৰত গোবৰ ব্যৱহাৰ কৰিলে ২১ দিনলৈ ৰস চুই খোৱা পোক-পৰুৱাৰ পৰা সুৰক্ষা পোৱা যায়।

| নহয়। | ৰোগ/ কীট-পতংগ | নিয়ন্ত্ৰণ | প্ৰতি লিটাৰ পানীত পৰিমাণ |
|-------|-----------------|--------------|----------------------------------|
| ১ | ফলৰ পচি যোৱা | ডাইথেন এম-৪৫ | প্ৰতি লিটাৰত ০২ গ্ৰাম |
| ২ | উইল্ট | এলিয়েট | প্ৰতি লিটাৰত ০২ গ্ৰাম |
| ৩ | প্ৰি ব্লাইট | এণ্টাৰকল কৰক | প্ৰতি লিটাৰত ০৩ গ্ৰাম |
| ৪ | লেট ব্লাইট | মেলাডি ডুঅ' | প্ৰতি একৰত ৬০০ গ্ৰাম |
| ৫ | পাতত বগা দাগ | বেলেটন | প্ৰতি একৰত ২০০ গ্ৰাম |
| ৬ | fruit borer কীট | প্ৰফেনোফছ | ০১ মিনিটা. লি প্ৰতি লি |
| | | খ্যাতি | ০.২৫ মিনিটা. লি প্ৰতি লি |
| ৭ | পাতৰ খনিকৰ পোক | কনফিডৰ চুপাৰ | ০৬ মিনিটা. প্ৰতি লিটাৰত ১৫ লিটাৰ |
| ৮ | এফিড আৰু হপাৰ | কনফিডৰ | ০.৫ মিনিটা. লি প্ৰতি লি |
| | | এক্টা | প্ৰতি ১০ লিটাৰত ০৪ গ্ৰাম |
| ৯ | থ্ৰিপছ | ৰিজেন্ট | ০২ মিনিটা. লি প্ৰতি লি |
| ১০ | বগা মাখি | লানো | ০২ মিনিটা. লি প্ৰতি লি |
| | | পেগাছাছ | প্ৰতি লিটাৰত ০১ গ্ৰাম |
| ১১ | হ'ব পাৰে | চালফাৰ | প্ৰতি লিটাৰত ০২ গ্ৰাম |
| | | মেজিষ্টাৰ | ০২ মিনিটা. লি প্ৰতি লি |

পাতৰ কুটিল আৰু মোজাইক (ভাইৰেল ৰোগ) - পাতবোৰ তললৈ কুটি কুটি কুটি কুটি কুটি যায়, আক্ৰান্ত পাতবোৰ সৰু, ডাঠ আৰু ৰক্ষ হৈ পৰে। পাতৰ ৰং হালধীয়া হয় আৰু যদি ৰোগ তীব্ৰ হৈ পৰে তেন্তে ফুলবোৰো ফুল নাথাকে। এই ৰোগ বগা মাখিৰ দ্বাৰা হয়, সেয়েহে ইহঁতক নিয়ন্ত্ৰণ কৰিব লাগে। ইয়াক প্ৰতিৰোধ কৰিবলৈ ইমিডাক্সপ্ৰিড (প্ৰতি ৫০০ লিটাৰ পানীত ১০০ মিলিলিটাৰ) প্ৰতিস্থাপনৰ ৩ সপ্তাহৰ পিছত আৰু প্ৰয়োজন অনুসৰি ১৫ দিনৰ ব্যৱধানত ব্যৱহাৰ কৰিব লাগে।

জলসিঞ্চন:- শীতকালত ৬ৰ পৰা ৭ দিনৰ ব্যৱধানত আৰু গৰমৰ মাহত মাটিত থকা আৰ্দ্ৰতাৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি ১০-১৫ দিনৰ ব্যৱধানত জলসিঞ্চন কৰিব লাগে। তিয়াই খোৱাৰ পিছত অত্যধিক পানী দিলে টমেটো ফাটি যায়। ফুল ফুলাৰ সময়ত জলসিঞ্চন গুৰুত্বপূৰ্ণ। বহু গৱেষণাৰ মতে দেখা গৈছে যে প্ৰতি পষেকত আধা ইঞ্চি জলসিঞ্চন কৰিলে শিপাবোৰ অধিক বিয়পি পৰে আৰু ইয়াৰ ফলত উৎপাদনো বৃদ্ধি পায়।

অপতৃণ নিয়ন্ত্ৰণ:- নিয়মিত ব্যৱধানত অপতৃণ কাটি থাকিব লাগে আৰু শিপা মাটিৰে ঢাকি ৰাখিব লাগে। পথাৰখন ৪৫ দিনলৈ অপতৃণমুক্ত কৰি ৰাখিব লাগে। যদি অপতৃণ নিয়ন্ত্ৰণৰ বাহিৰত গজে তেন্তে ই উৎপাদন ৭০-৯০ শতাংশ হ্রাস কৰিব পাৰে। পলিইথাইলিনৰ তৰপ ব্যৱহাৰ কৰি অপতৃণ নিয়ন্ত্ৰণ আৰু মাটিৰ উষ্ণতা হ্রাস কৰিব পাৰি।

শস্য চপোৱা:- পুলি ৰোপণৰ ৭০ দিনৰ পিছত গছবোৰে ফল দিবলৈ আৰম্ভ কৰে। চপোৱাৰ সময় নিৰ্ভৰ কৰে ফলবোৰ দূৰৈৰ ঠাইলৈ লৈ যাব লাগে নে সতেজ ফলবোৰ বজাৰতে বিক্ৰী কৰিব লাগে ইত্যাদি। ১/৪ ভাগ গোলাপী ৰঙৰ পকা সেউজীয়া টমেটো দীৰ্ঘ দূৰত্বৰ গন্তব্যস্থানলৈ লৈ যোৱাৰ বাবে ব্যৱহাৰ কৰা হয়। বেছিভাগ ফল গোলাপী বা ৰঙা হয় যদিও কঠিন পাল্ল থকা টমেটো ওচৰৰ বজাৰত বিক্ৰী কৰিব পাৰি। সম্পূৰ্ণ পকা আৰু কোমল পাল্ল টমেটো অন্যান্য সামগ্ৰী প্ৰস্তুত আৰু বীজ প্ৰস্তুত কৰাত ব্যৱহাৰ কৰা হয়।

বি:দ্ৰ:- ওপৰৰ সকলো তথ্য আমাৰ গৱেষণা কেন্দ্ৰত কৰা পৰীক্ষাৰ ভিত্তিত কৰা হৈছে। বিভিন্ন স্থানত বিভিন্ন জলবায়ু, মাটিৰ প্ৰকাৰ আৰু ঋতুৰ বাবে ওপৰৰ তথ্যসমূহ ভিন্ন হ'ব পাৰে।

জলবায়ু:- টমেটো সারা বছর ধরে চাষ করা যায়, তবে এই ফসল অতিরিক্ত আর্দ্রতা এবং তুষারপাত সহ্য করতে পারে না। এর জন্য উপযুক্ত তাপমাত্রা হল ১৮ ডিগ্রি থেকে ২৭ ডিগ্রি সেন্টিগ্রেড। ফল ধরার জন্য আদর্শ রাতের তাপমাত্রা ১৫°C থেকে ২০°C এর মধ্যে হওয়া উচিত। অতিরিক্ত তাপ ফলের রঙ এবং স্বাদের উপর বিরূপ প্রভাব ফেলে।

জমি নির্বাচন:- পুষ্টিগুণ সমৃদ্ধ দোআঁশ মাটি এর চাষের জন্য উপযুক্ত। এর জন্য, একটি ভালো নিষ্কাশন ব্যবস্থা থাকা প্রয়োজন।

জমি তৈরি:- উন্নত টমেটো চাষ থেকে সর্বাধিক উৎপাদন পেতে, মাটি ঘোরানোর লাঙ্গল দিয়ে প্রথমে চাষ করার পর, একটি কাল্টিভেটর দিয়ে ২ থেকে ৩ বার চাষ করুন। যদি চাষী না থাকে তাহলে আপনি হারোও ব্যবহার করতে পারেন। প্রতিবার চাষের পর, একটি লেভেলার ব্যবহার করুন যাতে চাষের সময় বেরিয়ে আসা টিলাগুলি ভেঙে যায়। এবং জমি সমতল হয়ে যায়।

বীজ শোধন:- প্রতি কেজি বীজে ১.৫-২ গ্রাম ব্যাভিস্টিন প্রয়োগ করুন।

রোপণের সময়: টমেটো রোপণের সময় জলবায়ু এবং তাপমাত্রার উপর নির্ভর করে।

বর্ষাকাল - জুন - জুলাই, শরৎকাল - অক্টোবর - নভেম্বর, বসন্তকাল - জানুয়ারি - ফেব্রুয়ারি

বীজের হার: প্রতি হেক্টরে ১২৫ থেকে ১৫০ কেজি বীজের প্রয়োজন।

রোপণের দূরত্ব: টমেটো বীজ রোপণের আগে, আপনার প্রয়োজন অনুসারে ১ মিটার চওড়া এবং ১ মিটার লম্বা ছোট ছোট বেড তৈরি করুন এবং তারপর সারি সারি বীজ বপন করুন। এটি ৪-৫ সপ্তাহের মধ্যে প্রস্তুত হয়ে যায়।

রোপণের দূরত্ব: গাছ থেকে গাছ - ৪৫-৬০ সেমি, সারি থেকে সারি - ৬০-৯০ সেমি।

সার এবং সার:- ক্ষেত প্রস্তুত করার সময়, প্রতি হেক্টরে মাটিতে ২০ থেকে ২৫ টন পচা গোবর সার বা কম্পোস্ট মিশিয়ে দিন।

| না। | প্রতি হেক্টরে রাসায়নিক সার | নাইট্রোজেন (কেজি) | ফসফরাস (কেজি) | পটাশ (কেজি) |
|-----|--|-------------------|---------------|-------------|
| ১ | চারা রোপণের ৬-৮ দিনের মধ্যে প্রথম ডোজ | ২০০ | ১০০ | ১০০ |
| ২ | প্রথম ডোজের ১৫-২০ দিন পর দ্বিতীয় ডোজ | ৫০ | ১০০ | ১০০ |
| ৩ | দ্বিতীয় ডোজের ১৫-২০ দিন পর তৃতীয় ডোজ | ৫০ | ০০ | ০০ |
| ৪ | প্রথম ফল সংগ্রহের পর | ৫০ | ০০ | ০০ |

রোগ ও পোকামাকড় নিয়ন্ত্রণ: রাসায়নিক ওষুধের মাত্রা এবং সময়:- প্রতি একরে ফেরটেরা (ডুপল) ৪ কেজি অথবা প্রতি একরে ভার্টিকো (সিনজেন্ট) ২.৫ কেজি সারের সাথে ব্যবহার করলে ২১ দিনের জন্য রস চুষে নেওয়া পোকামাকড় থেকে সুরক্ষা পাওয়া যায়।

| না। | রোগ/পোকামাকড় | নিয়ন্ত্রণ | প্রতি লিটার পানিতে পরিমাণ |
|-----|------------------------|---------------|---------------------------------|
| ১ | ফলের পচা রোগ | ডাইথেন এম-৪৫ | ০২ গ্রাম প্রতি লিটার |
| ২ | শুকিয়ে যাওয়া | অ্যালিয়েট | ০২ গ্রাম প্রতি লিটার |
| ৩ | প্রাক-ধ্বংস | এন্টারকল | ০৩ গ্রাম প্রতি লিটার |
| ৪ | দেবীতে বলসানো রোগ | মেলোডি ডুও | প্রতি একরে ৬০০ গ্রাম |
| ৫ | পাতায় সাদা দাগ | বেলায়টন | প্রতি একরে ২০০ গ্রাম |
| ৬ | ফল ছিদ্রকারী পোকামাকড় | প্রোফেনোফোস | ০১ মিনিট। লি পার লি |
| | | খ্যাতি | ০.২৫ মিনিট। লি পার লি |
| ৭ | পাতা খননকারী পোকা | কনফিডার সুপার | ০৬ মিনিট। প্রতি লিটারে ১৫ লিটার |
| ৮ | জাবপোকা এবং ফড়িং পোকা | কনফিডার | ০.৫ মিনিট। লি পার লি |
| | | অ্যাক্টা | প্রতি ১০ লিটারে ০৪ গ্রাম |
| ৯ | থ্রিপস | রিজেন্ট | ০২ মিনিট। লি পার লি |
| ১০ | সাদা মাছি | লানো | ০২ মিনিট। লি পার লি |
| | | পেগাসাস | ০১ গ্রাম প্রতি লিটার |
| | হতে পারে | সালফার | ০২ গ্রাম প্রতি লিটার |
| | | ম্যাজিস্টার | ০২ মিনিট। লি পার লি |

পাতা কুঁচকানো এবং মোজাইক (ভাইরাল রোগ) - পাতা নিচের দিকে কুঁচকে যায় এবং মোচড় দেয়, আক্রান্ত পাতা ছোট, ঘন এবং রুক্ষ হয়ে যায়। পাতার রঙ হলুদ হয়ে যায় এবং রোগ তীব্র হলে ফুলও ফোটে না। এই রোগটি সাদা মাছি দ্বারা হয়, তাই এগুলি নিয়ন্ত্রণ করা উচিত। এটি প্রতিরোধ করার জন্য, রোপণের ৩ সপ্তাহ পরে এবং প্রয়োজন অনুসারে ১৫ দিনের ব্যবধানে ইমিডাক্লোপ্রিড (প্রতি ৫০০ লিটার পানিতে ১০০ মিলি) ব্যবহার করুন।

সেচ:- শীতকালে, ৬ থেকে ৭ দিন অন্তর সেচ দিন এবং গ্রীষ্মকালে, মাটির আর্দ্রতার উপর নির্ভর করে ১০-১৫ দিন অন্তর সেচ দিন। টমেটো ভিজানোর পর অতিরিক্ত জল দিলে টমেটোতে ফাটল দেখা দেয়। ফুল ফোটার সময় সেচ গুরুত্বপূর্ণ। অনেক গবেষণা অনুসারে, দেখা গেছে যে প্রতি দুই সপ্তাহ অন্তর আধা ইঞ্চি সেচ দিলে শিকড় আরও ছড়িয়ে পড়ে এবং ফলনও বৃদ্ধি পায়।

আগাছা নিয়ন্ত্রণ:- নিয়মিত বিরতিতে আগাছা পরিষ্কার করতে থাকুন এবং মাটি দিয়ে শিকড় ঢেকে দিন। ৪৫ দিন ধরে জমি আগাছামুক্ত রাখুন। যদি আগাছা নিয়ন্ত্রণের বাইরে চলে যায়, তাহলে ফলন ৭০-৯০ শতাংশ কমে যেতে পারে। আগাছা নিয়ন্ত্রণ এবং মাটির তাপমাত্রা কমাতে, পলিথিনের একটি স্তর ব্যবহার করা যেতে পারে।

ফসল সংগ্রহ:- চারা রোপণের ৭০ দিন পর গাছে ফল ধরা শুরু হয়। ফসল তোলার সময় নির্ভর করে ফল দূরবর্তী স্থানে নিয়ে যেতে হবে নাকি তাজা ফল বাজারে বিক্রি করতে হবে ইত্যাদির উপর। পাকা সবুজ টমেটো, যার এক-চতুর্থাংশ অংশ গোলাপী রঙের, দূর-দূরান্তের গন্তব্যে পরিবহনের জন্য ব্যবহার করা হয়। বেশিরভাগ ফল গোলাপী বা লাল হয়ে যায়, তবে শক্ত মণ্ডল টমেটো কাছাকাছি বাজারে বিক্রি করা যেতে পারে। সম্পূর্ণ পাকা এবং নরম পাল্ল টমেটো অন্যান্য পণ্য তৈরি এবং বীজ তৈরিতে ব্যবহৃত হয়।

দ্রষ্টব্য:- উপরের সমস্ত তথ্য আমাদের গবেষণা কেন্দ্রে পরিচালিত পরীক্ষার উপর ভিত্তি করে। বিভিন্ন স্থানে বিভিন্ন জলবায়ু, মাটির ধরণ এবং ঋতুর কারণে উপরোক্ত তথ্যগুলি ভিন্ন হতে পারে।

ਟਮਾਟਰ

ਕਿਸਮਾਂ:- PKM-1, ਅਰਕਾ ਵਿਕਾਸ, ਵਿਸ਼ਵਾਸ, ਵਿਸ਼ਾਲ, ਵਿਕਰਾਂਤ, S-21, ਵਿਪੁਲ।

ਜਲਵਾਯੂ:- ਟਮਾਟਰ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਸਾਲ ਭਰ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਪਰ ਇਹ ਫਸਲ ਜ਼ਿਆਦਾ ਨਮੀ ਅਤੇ ਠੰਡ ਨੂੰ ਬਰਦਾਸ਼ਤ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੀ। ਇਸ ਲਈ, ਢੁਕਵਾਂ ਤਾਪਮਾਨ 18 ਡਿਗਰੀ ਤੋਂ 27 ਡਿਗਰੀ ਸੈਂਟੀਗਰੇਡ ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਹੈ। ਫਲਾਂ ਦੀ ਬਿਜਾਈ ਲਈ ਰਾਤ ਦਾ ਆਦਰਸ਼ ਤਾਪਮਾਨ 15°C ਅਤੇ 20°C ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਗਰਮੀ ਫਲਾਂ ਦੇ ਰੰਗ ਅਤੇ ਸੁਆਦ 'ਤੇ ਮਾੜਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਾਉਂਦੀ ਹੈ।

ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਚੋਣ:- ਪੌਸ਼ਟਿਕ ਤੱਤਾਂ ਨਾਲ ਭਰਪੂਰ ਏਮਟ ਮਿੱਟੀ ਇਸਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ ਢੁਕਵੀਂ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਲਈ, ਇੱਕ ਵਧੀਆ ਡਰੇਨੇਜ ਸਿਸਟਮ ਹੋਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ।

ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਤਿਆਰੀ:- ਟਮਾਟਰ ਦੀ ਉੱਨਤ ਕਾਸ਼ਤ ਤੋਂ ਵੱਧ ਤੋਂ ਵੱਧ ਉਤਪਾਦਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ, ਮਿੱਟੀ-ਮੇਜ਼ਨ ਵਾਲੇ ਹਲ ਨਾਲ ਪਹਿਲੀ ਵਾਰੀ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਕਲਟੀਵੇਟਰ ਨਾਲ 2 ਤੋਂ 3 ਵਾਰੀ ਕਰੋ। ਜੇਕਰ ਕਲਟੀਵੇਟਰ ਉਪਲਬਧ ਨਹੀਂ ਹੈ ਤਾਂ ਤੁਸੀਂ ਹੋਰ ਵੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹੋ। ਹਰ ਵਾਰ ਵਾਹੁਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਲੈਵਲਰ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰੋ ਤਾਂ ਜੋ ਵਾਹੁਣ ਦੌਰਾਨ ਨਿਕਲਣ ਵਾਲੇ ਢੇਰ ਟੁੱਟ ਜਾਣ। ਅਤੇ ਜ਼ਮੀਨ ਪੱਧਰੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਬੀਜ ਉਪਚਾਰ:- ਪ੍ਰਤੀ ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ ਵਿੱਚ 1.5-2 ਗ੍ਰਾਮ ਬਾਇਸਟਿਨ ਪਾਓ।

ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟੇਸ਼ਨ ਦਾ ਸਮਾਂ: ਟਮਾਟਰ ਦੀ ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟੇਸ਼ਨ ਦਾ ਸਮਾਂ ਮੌਸਮ ਅਤੇ ਤਾਪਮਾਨ 'ਤੇ ਨਿਰਭਰ ਕਰਦਾ ਹੈ।
ਮੌਨਸੂਨ ਸੀਜ਼ਨ - ਜੂਨ - ਜੁਲਾਈ, ਪਤਝੜ ਸੀਜ਼ਨ - ਅਕਤੂਬਰ - ਨਵੰਬਰ, ਬਸੰਤ ਸੀਜ਼ਨ - ਜਨਵਰੀ - ਫਰਵਰੀ

ਬੀਜ ਦਰ: ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ 125 ਤੋਂ 150 ਕਿਲੋ ਬੀਜ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਦੂਰੀ: ਟਮਾਟਰ ਦੇ ਬੀਜ ਬੀਜਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ, ਆਪਣੀ ਲੋੜ ਅਨੁਸਾਰ 1 ਮੀਟਰ ਚੌੜੇ ਅਤੇ 1 ਮੀਟਰ ਲੰਬੇ ਆਕਾਰ ਦੇ ਛੋਟੇ ਬੈੱਡ ਬਣਾਓ ਅਤੇ ਫਿਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਕਤਾਰ ਦਰ ਕਤਾਰ ਬੀਜੋ। ਇਹ 4-5 ਹਫ਼ਤਿਆਂ ਵਿੱਚ ਤਿਆਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਫਾਸਲਾ: ਪੌਦੇ ਤੋਂ ਪੌਦੇ - 45-60 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ, ਕਤਾਰ ਤੋਂ ਕਤਾਰ - 60-90 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ।

ਖਾਦ ਅਤੇ ਖਾਦ:- ਖੇਤ ਤਿਆਰ ਕਰਦੇ ਸਮੇਂ, ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ 20 ਤੋਂ 25 ਟਨ ਸੜੀ ਹੋਈ ਗਾਂ ਦੀ ਖਾਦ ਜਾਂ ਖਾਦ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਮਿਲਾਓ।

| ਨਹੀਂ। | ਰਸਾਇਣਕ ਖਾਦ ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ | ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ (ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ) | ਫਾਸਫੋਰਸ (ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ) | ਪੋਟਾਸ਼ (ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ) |
|-------|--|-----------------------|---------------------|--------------------|
| 1 | ਪਹਿਲੀ ਖੁਰਾਕ ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ 6-8 ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰ | 200 | 100 | 100 |
| 2 | ਪਹਿਲੀ ਖੁਰਾਕ ਤੋਂ 15-20 ਦਿਨ ਬਾਅਦ ਦੂਜੀ ਖੁਰਾਕ | 50 | 100 | 100 |
| 3 | ਦੂਜੀ ਖੁਰਾਕ ਤੋਂ 15-20 ਦਿਨ ਬਾਅਦ ਤੀਜੀ ਖੁਰਾਕ | 50 | 00 | 00 |
| 4 | ਪਹਿਲੇ ਫਲ ਦੀ ਵਾਢੀ ਤੋਂ ਬਾਅਦ | 50 | 00 | 00 |

ਰੋਗ ਅਤੇ ਕੀਟ ਨਿਯੰਤਰਣ: ਰਸਾਇਣਕ ਦਵਾਈ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਅਤੇ ਸਮਾਂ:- ਫਰਟੇਰਾ (ਡੂਪੋਡ) 4 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਜਾਂ ਵਰਟੀਕੋ (ਸਿੰਜੈਟਾ) 2.5 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਖਾਦ ਦੇ ਨਾਲ ਵਰਤਣ ਨਾਲ 21 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਰਸ ਦੂਸਣ ਵਾਲੇ ਕੀੜਿਆਂ ਤੋਂ ਸੁਰੱਖਿਆ ਮਿਲਦੀ ਹੈ।

| ਨਹੀਂ। | ਬਿਮਾਰੀਆਂ/ਕੀੜੇ | ਨਿਯੰਤਰਣ | ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ ਦੀ ਮਾਤਰਾ |
|-------|------------------------|--------------|----------------------------|
| 1 | ਫਲਾਂ ਦਾ ਸੜਨ | ਡਾਇਬੇਨ ਐਮ-45 | 02 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ |
| 2 | ਮੁਰਝਾ | ਅਲੀਅਟ | 02 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ |
| 3 | ਝੁਲਸ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ | ਐਂਟਰਕਾਲ | 03 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ |
| 4 | ਪਿਛੇਤਾ ਝੁਲਸ ਰੋਗ | ਮੈਲੇਡੀ ਡੂਓ | 600 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ |
| 5 | ਪੱਤਿਆਂ 'ਤੇ ਚਿੱਟੇ ਧੱਬੇ। | ਬੇਲੇਟਨ | 200 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ |
| 6 | ਫਲ ਛੇਦਕ ਕੀਟ | ਪ੍ਰੋਫੇਨੋਫੋਸ | 01 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪਰ ਲੀ |
| | | ਪ੍ਰੀਸਿਧੀ | 0.25 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪਰ ਲੀ |
| 7 | ਪੱਤਾ ਖੇਦਣ ਵਾਲਾ ਕੀੜਾ | ਕਨਫਿਡੋਰ ਸੁਪਰ | 06 ਮਿੰਟ 15 ਲੀਟਰ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ |
| 8 | ਚੋਪਾ ਅਤੇ ਟਿੱਡੀ | ਕਨਫਿਡੋਰ | 0.5 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪਰ ਲੀ |
| | | ਐਕਟਰਾ | 04 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ 10 ਲੀਟਰ |
| 9 | ਥਿਪਸ | ਗੀਜੈਂਟ | 02 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪਰ ਲੀ |
| 10 | ਚਿੱਟੀ ਮੱਖੀ | ਲੈਨੋ | 02 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪਰ ਲੀ |
| | | ਪੈਗਾਸਸ | 01 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ |
| | ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ | ਗੰਧਕ | 02 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ |
| | | ਮੈਜਿਸਟਰ | 02 ਮਿੰਟ ਲੀ ਪਰ ਲੀ |

ਪੱਤਿਆਂ ਦਾ ਮਰੋੜ ਅਤੇ ਮੇਜ਼ੇਕ (ਵਾਇਰਲ ਰੋਗ) - ਪੱਤੇ ਹੇਠਾਂ ਵੱਲ ਮੁੜ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਮਰੋੜ ਜਾਂਦੇ ਹਨ, ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਪੱਤੇ ਛੋਟੇ, ਸੰਘਣੇ ਅਤੇ ਖੁਰਦਰੇ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਪੱਤਿਆਂ ਦਾ ਰੰਗ ਪੀਲਾ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜੇਕਰ ਬਿਮਾਰੀ ਗੰਭੀਰ ਹੋ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਫੁੱਲ ਵੀ ਨਹੀਂ ਖਿੜਦੇ। ਇਹ ਬਿਮਾਰੀ ਚਿੱਟੀਆਂ ਮੱਖੀਆਂ ਕਾਰਨ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕੰਟਰੋਲ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਲਈ, ਟ੍ਰਾਂਸਪਲਾਂਟ ਕਰਨ ਤੋਂ 3 ਹਫ਼ਤੇ ਬਾਅਦ ਅਤੇ ਲੋੜ ਅਨੁਸਾਰ 15 ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਤਰਾਲ 'ਤੇ ਇਮੀਡਾਕਲੋਪ੍ਰਿਡ (100 ਮਿ.ਲੀ. ਪ੍ਰਤੀ 500 ਲੀਟਰ ਪਾਣੀ) ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰੋ।

ਸਿੰਚਾਈ:- ਸਰਦੀਆਂ ਵਿੱਚ, 6 ਤੋਂ 7 ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਤਰਾਲ 'ਤੇ ਸਿੰਚਾਈ ਕਰੋ ਅਤੇ ਗਰਮੀਆਂ ਦੇ ਮਹੀਨਿਆਂ ਵਿੱਚ, ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਨਮੀ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ 10-15 ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਤਰਾਲ 'ਤੇ ਸਿੰਚਾਈ ਕਰੋ। ਭਿੱਜਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਜ਼ਿਆਦਾ ਪਾਣੀ ਦੇਣ ਨਾਲ ਟਮਾਟਰਾਂ ਵਿੱਚ ਤਰੇੜਾਂ ਪੈ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਫੁੱਲ ਆਉਣ ਵੇਲੇ ਸਿੰਚਾਈ ਬਹੁਤ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਕਈ ਅਧਿਐਨਾਂ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ, ਇਹ ਪਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਹਰ ਪੰਦਰਵਾੜੇ ਅੱਧਾ ਇੰਚ ਸਿੰਚਾਈ ਕਰਨ ਨਾਲ, ਜੜ੍ਹਾਂ ਵਧੇਰੇ ਫੈਲਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਇਸ ਨਾਲ ਝਾੜ ਵੀ ਵਧਦਾ ਹੈ।

ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਰੋਕਥਾਮ:- ਨਿਯਮਤ ਅੰਤਰਾਲਾਂ 'ਤੇ ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਪੁਟਾਈ ਕਰਦੇ ਰਹੋ ਅਤੇ ਜੜ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮਿੱਟੀ ਨਾਲ ਢੱਕ ਦਿਓ। ਖੇਤ ਨੂੰ 45 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਨਦੀਨ ਮੁਕਤ ਰੱਖੋ। ਜੇਕਰ ਨਦੀਨ ਕਾਬੂ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਇਹ ਝਾੜ 70-90 ਪ੍ਰਤੀਸ਼ਤ ਘਟਾ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਨਦੀਨਾਂ ਨੂੰ ਕੰਟਰੋਲ ਕਰਨ ਅਤੇ ਮਿੱਟੀ ਦੇ ਤਾਪਮਾਨ ਨੂੰ ਘਟਾਉਣ ਲਈ, ਪੋਲੀਥੀਲੀਨ ਦੀ ਇੱਕ ਪਰਤ ਵਰਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਫ਼ਸਲ ਦੀ ਕਟਾਈ:- ਪੌਦੇ ਬੀਜਣ ਤੋਂ 70 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਫਲ ਦੇਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਕਟਾਈ ਦਾ ਸਮਾਂ ਇਸ ਗੱਲ 'ਤੇ ਨਿਰਭਰ ਕਰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਫਲਾਂ ਨੂੰ ਦੂਰ-ਦੁਰਾਡੇ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਲਿਜਾਣਾ ਹੈ ਜਾਂ ਤਾਜ਼ੇ ਫਲ ਬਾਜ਼ਾਰ ਵਿੱਚ ਹੀ ਵੇਚਣੇ ਹਨ ਆਦਿ। ਪੱਕੇ ਹਰੇ ਟਮਾਟਰ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ 1/4 ਹਿੱਸਾ ਗੁਲਾਬੀ ਰੰਗ ਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਲੰਬੀ ਦੂਰੀ ਦੀਆਂ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਲਿਜਾਣ ਲਈ ਵਰਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਫਲ ਗੁਲਾਬੀ ਜਾਂ ਲਾਲ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ, ਪਰ ਸਖ਼ਤ ਗੁੱਦੇ ਵਾਲੇ ਟਮਾਟਰ ਨੇੜਲੇ ਬਾਜ਼ਾਰ ਵਿੱਚ ਵੇਚੇ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪੱਕੇ ਅਤੇ ਨਰਮ ਗੁੱਦੇ ਵਾਲੇ ਟਮਾਟਰਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਹੋਰ ਉਤਪਾਦ ਬਣਾਉਣ ਅਤੇ ਬੀਜ ਤਿਆਰ ਕਰਨ ਲਈ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਨੋਟ:- ਉਪਰੋਕਤ ਸਾਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਡੇ ਖੋਜ ਕੇਂਦਰ ਵਿਖੇ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਯੋਗਾਂ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ। ਉਪਰੋਕਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਜਲਵਾਯੂ, ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਕਿਸਮ ਅਤੇ ਮੌਸਮ ਦੇ ਕਾਰਨ ਵੱਖਰੀ ਹੈ। ਕਾਮੀ ਸੇ ਬਦਲਾਵ ਆ ਸਕਦਾ ਹੈ।